ध्यान दें:

19

वनेचर का गुप्तचर के अनुरूप वचन

हिन्दु संस्कृति में प्राचीन काल से ही महाभारत की अमूल्य गणना है। शास्त्रों में महाभारत विषय में भारत पंचम वेद है ऐसा प्रसिद्ध है। इसके रचयिता महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यास ने ग्रन्थ के विषय में स्वयं कहा है- जो यहाँ नहीं है वह कहीं नहीं है। इस ग्रन्थ के वनपर्व की कथा महाकवि भारवि ने किरातार्जुनीय महाकाव्य में संग्रहीत की है। वहाँ द्यूत में नियमों के अनुसार पराजित युधिष्ठिर राज नष्ट होने पर भाईयों और द्रौपदी के साथ वन में रहते थे। उस वनेचर को दुर्योधन की प्रजापालन की नीतियों को जानने के लिए हस्तिनापुर भेजा। और उस गुप्तचर ने वहाँ जाकर सब कुछ कैसा है जाना। और वहाँ से वापिस आकर राजा युधिष्ठिर के लिए किस रीति से निवेदित किया इत्यादि हम इस पाठ में पढ़ेंगे। राजा का गुप्तचर उनके नेत्रों के समान होता है। इसलिए यदि वे झूठ बोले तो किसकी हानि होगी तुम भी अनुमान लगा सकते हो। इसलिए वे कष्टदायक सत्य वचन को भी राजा के समीप में रखता है सप्रसंग इस पाठ में जानेंगे। वस्तुतः राजा का गुप्तचर कैसा हो हम इस पाठ से जानते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे:

- गुप्तचर राजकार्य को कैसे करते हैं जानने में;
- राजा तथा अमात्यों के मध्य में कैसा सम्पर्क होना चाहिए, जानने में;
- हितैषी गुप्तचर कैसे होते हैं जानने में;
- भारवि अर्थ गौरव के विषय में जानने में;
- इस पाठ को पढ़कर अलंकार विषय का ज्ञान प्राप्त करने में;
- छन्द ज्ञान जान पाने में;

19.1) मूल पाठ

श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं प्रजासु वृत्तिं यमयुक्त वेदितुम्।
स वर्णिलिंगी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः॥11॥

ध्यान दें:

कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे जितां सपत्नेन निवेदयिष्यतः।
न विव्यथे तस्य मनो न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः॥12॥

द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतो रहस्यनुज्ञामधिगम्य भूभृतः।
स सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीं विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे॥13॥

क्रियासु युक्तैर्नृप चारचक्षुषो न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।
अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः॥14॥

स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपं हितान्न यः संशृणुते स किंप्रभुः।
सदाऽनुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः॥15॥

निसर्गदुर्बोधमबोधविक्लवाः क्व भूपतीनां चरितं क्व जन्तवः।
तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्॥16॥

19.2) मूल पाठ

श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं प्रजासु वृत्तिं यमयुक्त वेदितुम्।
स वर्णिलिंगी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः॥11॥

अन्वय- कुरूणां अधिपस्य श्रियः पालनीं प्रजासु वृत्तिम् यम् वनेचरं युधिष्ठिरः अयुक्त। वर्णिलिंगी विदितः सन् स वनेचरः द्वैतवने युधिष्ठिरं समाययौ।

अन्वय अर्थ- कुरू देश के राजा दुर्याधन की राजलक्ष्मी का पालन करने विषय में, प्रजा सम्बन्धी व्यवहार के विषय में, वृत्ति व्यवहार को, जिस व्यवहार से प्रजा पालित राजा की प्रतिष्ठा होती है, राजा युधिष्ठिर का वैसा व्यवहार है अथवा नहीं जानने के लिए जो वनेचर नियुक्त किया राज्य के वृतान्त को सम्यक् रूप से जानने के लिए गुप्तचर के रूप में हस्तिनापुर को भेजा वह ब्रह्मचारी वेशधारी वनेचर शत्रु दुर्योधन के गुप्त रहस्य को जानकर द्वैतवन नामक तपोवन में युधिष्ठिर के समीप लौट आया।

सरलार्थ- दुर्योधन से द्यूत क्रीड़ा में छल से पराजित युधिष्ठिर सब कुछ हार करके वनवास में रह रहे थे। तब युधिष्ठिर के मन में दुर्योधन कैसा राज्य करता है इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ। जिसके राज्य में यदि प्रजा प्रसन्न हो तब ही राज लक्ष्मी अर्थात् धन वैभव सुप्रतिष्ठित होता है। उस दुर्योधन की राज्य संचालन की पद्धति को जानने के लिए वनेचर को भेजा। और उसने ब्रह्मचारी वेश को धारण करके वहाँ जाकर सब कुछ ज्ञात किया। फिर वह गुप्तचर युधिष्ठिर से सब कहने के लिए युधिष्ठिर के समीप द्वैतवन आया।

तात्पर्यार्थ- प्रस्तुत इस श्लोक में गुप्तचर के महत्व का प्रतिपादन किया है। राज्य हारे हुए युधिष्ठिर वन में भाइयों और द्रौपदी के साथ रहते है। उन्होंने दुर्योधन की प्रजापालन की नीतियों को जानने के लिए वनेचर को हस्तिनापुर भेजा। वहाँ जाकर सब यथा स्वरूप जानकर वह वनेचर युधिष्ठिर के प्रति द्वैतवन को लौट आया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- वेदितुम्- विद् धातु+ तुमुन् प्रत्यय।
- युधिष्ठिरः- युधिः स्थिरः।

ध्यान दें:

- वनेचरः - वने + चर् + ट, चरेष्टः से
- अयुक्त- युज् धातु, लङ् लकार, प्रथम पुरुष एकवचन।
- समाययौ - सम् + आ + या धातु लिट् लकार, प्रथम पुरुष एकवचन

प्रयोग परिवर्तन-

- कुरूणाम् अधिपस्य श्रियः पालनीं प्रजासु वृत्तिम् वेदितुम् युधिष्ठिरेण यः अयुज्यत, वर्णिलिंगिना तेन वनेचरेण द्वैतवने युधिष्ठिरः समाययै।

अलंकार आलोचना-

- वने वनेचरः - यहाँ वृत्य अनुप्रास अलंकार है। यहाँ वकार और नकार की बार-बार आवृत्ति के कारण।

कोशः-

- श्रीः - लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा कमला श्रीर्हरिप्रिया।

पाठगत प्रश्न-1.1

1. वनेचर कहाँ लौट आया?
2. वनेचर किसके पास लौट आया?
3. युधिष्ठिर ने क्या जानने के लिए वनेचर को नियुक्त किया?
4. वनेचर शब्द का क्या अर्थ है?
5. वर्णिलिंगी किसका विशेषण है?

मूल पाठ

कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे जितां सपत्नेन निवेदयिष्यतः।
न विव्यथे तस्य मनो न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः॥12॥

अन्वय- कृतप्रणामस्य सपत्नेन जितां महीं महीभुजे निवेदयिष्यतः तस्य मनः न विव्यथे। हि हितैषिणः मृषा प्रियं प्रवक्तुं न इच्छन्ति।

अन्वयार्थ- युधिष्ठिर को प्रणाम करके शत्रु दुर्योधन के द्वारा वश में की हुई पृथ्वी राज्य के विषय में राजा युधिष्ठिर के लिए कहते हुए उस वनेचर का मन विचलित नहीं हुआ। शत्रु राज्य को जीतकर जिस प्रकार से पालित कर रहा इस प्रकार के अप्रिय वचनों को राजा से कहते हुए वह विचलित नहीं हुआ। बिना विचलित हुए कहता है। क्योंकि जो हितैषी प्रभु कल्याण की कामना करता है वह कभी भी असत्य न कहते। प्रिय मधुर सुनने में सुखद वचनों को कहने की इच्छा नहीं करते।

सरलार्थ- वनेचर प्रजाओं में दुर्योधन के व्यवहार को जानकर वन को लौट आया। फिर युधिष्ठिर को प्रणाम करके दुर्योधन के द्वारा वशीकृत राज्य की शासन विधि को यथारूप कहा। परन्तु राजा से कैसे अप्रिय बात कहूँ ऐसा विचार करके उसका मन व्यथित नहीं हुआ। अप्रिय सत्य कथन ही

पाठ-19

वनेचर का गुप्तचर के अनुरूप वचन

ध्यान दें:

हितैषी गुप्तचरों का कर्तव्य है। वह प्रिय हो या अप्रिय। क्योंकि राजा का हित चाहने वाले सेवक कभी मन में भी झूठ नहीं बोलते हैं। उनका सत्य कथन ही परम धर्म है।

तात्पर्यार्थ- प्रस्तुत इस श्लोक में गुप्तचर के गुण वर्णित है। और वे गुण चार प्रकार के है- चतुरता, स्फूर्ति, सत्यवादी और तार्किक। स्वामी के हित का सम्पादन ही गुप्तचर का परम प्रयोजन है। इसलिए नीति के विषय में राजा की सफलता अधिकतर दूत पर ही अवलम्बित है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- विव्यथे - व्यथ् + लिट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
- कृतप्रणामस्य - कृतः प्रणामः येन सः। बहुव्रीहि समास
- महीभुजे - महीं भुनक्ति। (चतुर्थी विभक्ति)
- हितैषिणः - हितम् इच्छन्ति। (हित + इष + णिनि)

सन्धि युक्त शब्द

- मनो न - मनः + न विसर्ग सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन-

- कृतप्रणामस्य सपत्नेन जितां महीं महीभुजे निवेदयिष्यतः तस्य मनसा न विव्यथे। हि हितैषिभिः मृषा प्रियं प्रवक्तुं न इष्यते।

अलंकार आलोचना-

- यहाँ हितैषी व्यक्ति असत्य प्रिय वचनों नहीं कहते हैं वाक्यार्थ को पूर्ववाक्य के समर्थन के लिए कहा है। अर्थान्तरन्यास अलंकार है।

कोशः-

- मही- गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी क्ष्माऽवनिर्मेदिनी मही।

पाठगत प्रश्न-2

7. किसका मन व्यथित नहीं हुआ?
8. हितैषी कैसे वचनों को कहना नहीं चाहते?
9. महीभुजे किसका विशेषण है?
10. हितैषी शब्द का क्या अर्थ है?

मूल पाठ

द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतो रहस्यनुज्ञामधिगम्यः भूभूतः।
स सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीं विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे॥13॥

अन्वय- स द्विषां विघाताय विधातुम् इच्छतः भूभूतः रहसि अनुज्ञाम् अधिगम्य सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीं

ध्यान दें:

वनेचर का गुप्तचर के अनुरूप वचन

विनिश्चितार्थाम् इति वाचम् आददे।

अन्वयार्थ- वह वनेचर शत्रुओं दुर्योधनादि कौरवों के विनाश के लिए व्यापार उद्योग करने की किसी प्रकार से शत्रुओं के संहार की इच्छा करते हुए राजा युधिष्ठिर की एकान्त में अनुमति को प्राप्त करके शब्द सौष्ठव और अर्थ गौरव के विशेष प्राधिक्य से सुशोभित इस प्रकार की वक्ष्यमाणरूपी वाणी को कहा।

सरलार्थ- वनेचर ने शत्रुओं के विनाश के लिए उपाय को सोचकर राजा युधिष्ठिर की आज्ञा को प्राप्त किया। फिर उसने एकान्त में तब कहने योग्य कथन को सुमधुर भाषा में कहना आरम्भ किया।

तात्पर्यार्थ- कैसा दुर्योधन राज्य करता है, और कैसे पराजित होगा इस सारे वृतान्त को जानने के लिए वनेचर हस्तिनापुर गया था। प्रस्तुत इस श्लोक में हस्तिनापुर से आया हुआ वनेचर युधिष्ठिर की आज्ञा को प्राप्त करके युधिष्ठिर के प्रति एकान्त में कैसे चमत्कारिक शब्दों से युक्त वचन को कहा वह सब वर्णित है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- भूभृतः - भुवं बिभर्ति ।
- विनिश्तिार्थम् - विशेषेण निश्चितः तृतीया तत्पुरुष
- आददे - आ + दा धातु, आत्मनेपद, लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।
- इच्छतः- इष् धातु, शत् प्रत्यय षष्ठी, एकवचन।

सन्धि युक्त शब्द

- रहस्यनुज्ञाम् - रहसि + अनुज्ञाम् यण सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन-

- रहसि तेन द्विषां विघाताय विधातुम् इच्छतः भूभृतः अनुज्ञाम् अधिगम्य सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनी विनिश्चितार्था इति वाक् आददे।

अलंकार आलोचना-

- यहाँ वृत्यनुप्रास अलंकार है। यहाँ वकार और तकार की बार बार आवृत्ति के कारण।

कोशः-

- रहः - विविक्तविजनक्षत्रनिःशलाकास्तथा रहः।

पाठगत प्रश्न-3

11. कौन शब्द सौन्दर्यशाली और असंदिग्ध वाणी को कहने लगा?
12. रहसि शब्द का क्या अर्थ है?
13. वनेचर ने क्या प्राप्त कर वचन को कहा?

पाठ-19

वनेचर का गुप्तचर के अनुरूप वचन

ध्यान दें:

14. युधिष्ठिर किस कारण से उद्योग की इच्छा करता है?

15. वनेचर ने कैसी वाणी को कहा?

मूल पाठ

क्रियासु युक्तैर्नृप चारचक्षुषो न वञ्चनीया: प्रभवोऽनुजीविभि:।
अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा हितं मनोहारि च दुर्लभं वच:॥14॥

अन्वय- हे नृप! क्रियासु युक्तै: अनुजीवभि: चारचक्षुष: प्रभव: न वंचनीया:। अत: असाधु वा साधु क्षन्तुम् अर्हसि। हितं मनोहारि च वच: दुर्लभम् भवति।

अन्वयार्थ- हे राजन्! युधिष्ठिर कार्यों में नियुक्त किए गए अनुचर गुप्तचरों के द्वारा देखने वाले स्वामी ठगे नहीं जाने चाहिए। राजा दूसरे राष्ट्र की जानकारी के लिए गुप्तचरों को नियुक्त करके सब यथारूप जानते हैं। इसलिए गुप्तचर ही उनके नयनों के समान है। इसीलिए इन कारणों से अप्रिय अथवा प्रिय को क्षमा करें। हितकारी अर्थात् कल्याणकारी, मनोहारी अर्थात् प्रिय वचन कठिनता से मिलने वाले है। इसलिए आप सुनें।

सरलार्थ- हे राजन्! किसी भी कार्य में नियुक्त सेवक को अपने स्वामी से धोखा नहीं करना चाहिए। क्योंकि स्वामी के चार नेत्र होते है। अर्थात् जो कोई नयनवान पुरुष नेत्रों से देखता है। उस ही प्रमाण को कहता है। एवम् गुप्तचर जो कहते है वह ही उनका प्रमाण होता है। हमेशा दुर्लभ वचन दुर्लभ ही है। इसलिए प्रिय अथवा अप्रिय जा हों धैर्य को धारण करके सुनें। और जो समीचीन अथवा असमीचीन बोलें उसके लिए क्षमा करें। क्योंकि एक ही वाक्य में हितकारी और मधुर वचन दोनों को प्राप्त नही कर सकते है।

तात्पर्यार्थ- प्रस्तुत इस श्लोक में गुप्तचर के कर्तव्यों का निरूपण किया गया है। कार्यों में नियुक्त सेवकों को राजा से सत्य ही बोलना चाहिए। क्योंकि वैसे ही सेवकों से स्वामी नयनवान होते हैं। झूठ बोलने वाले सेवकों से राजा अन्धे होते हैं। इसलिए जैसे अन्धे कूएँ में गिरते हैं, वैसे वे शत्रु के जाल में गिरते हैं। हितकारी वाक्य सत्य भी हमेशा प्रिय नहीं होते हैं। गुप्तचर के सत्य को सुनकर स्वामी को क्रोधित नहीं होना चाहिए। यदि गुप्तचर कभी भी असत्य सत्य को बोलेगा तो निश्चित ही राज्य का नाश होगा। इसलिए सेवक से हमेशा सत्य का निवेदन करना चाहिए और तब राजा अप्रिय वचनों को भी सुनें।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- चरचक्षुष: - चारा: एव चक्षांषि येषां ते, बहुब्रहि समास
- मनोहारि - मनो हरति।
- वचनीया:- वंच् धातु + अनीय प्रत्यय।
- दुर्लभम् - दु:खेन लभ्यते।

सन्धि युक्त शब्द

- युक्तैर्नृप - युक्तै: + नृप, विसर्ग सन्धि।
- अतोऽर्हसि- अत: + अर्हसि, विसर्ग सन्धि।

ध्यान दें:

प्रयोग परिवर्तन-

- नृप! क्रियासु युक्ताः अनुजीविनः चारचक्षुषः प्रभून् न वंचयेयुः, अतः असाधु साधु वा त्वया क्षन्तुम् अर्हति, हितेन मनोहारिणा च वचसा दुर्लभेन भूयते।

अलंकार आलोचना

- यहाँ हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः । वाक्यार्थ का 'मेरे प्रिय अथवा अप्रिय वचनों को सुनना चाहिए' वाक्यार्थ के प्रति युक्ति कथन से काव्यलिंग अलंकार है।

कोशः-

- प्रभुः- अधिभूर्नायको नेता प्रभुः परिवृढोऽधिपः।

पाठगत प्रश्न-4

16. कैसे सेवकों के द्वारा राजा नहीं ठगे जाने चाहिए?
17. कैसे वचन दुर्लभ है?
18. कैसा राजा नहीं ठगना चाहिए?
19. चारचक्षुषः शब्द का क्या अर्थ है?
20. स्वामी को कैसे वचन सुनने चाहिए?

मूल पाठ

स किंसरवा साधु न शास्ति योऽधिपं हितान्न यः संश्रृणुते स किंप्रभुः।
सदाऽनुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः॥15॥

अन्वय- यः अधिपं सयधु न शास्ति, स किंसखा। यः हितात् न संश्रृणुते, स किंप्रभुः। हि सदा अनुकूलेषु नृपेषु अमात्येषु च सर्वसम्पदः रतिं कुर्वते।

अन्वय अर्थ- जो अमात्यादि राजा को हितकर उपदेश नहीं करता है। वह राजा का हितकारक उपदेष्टा कुत्सित मन्त्री है। जो स्वामी हित बोलने वाले अमात्य की न तो सुनता है न ही हितकारी वचनों का ग्रहण करता है वह कुत्सित स्वामी है। क्योंकि सदा अनुराग युक्त राजाओं और मन्त्रियों में सभी सम्पदाएँ अनुराग करती है।

सरल अर्थ- जो मित्र अथवा मन्त्री स्वामी को हितकारी उपदेश नहीं करता वह कुत्सित मन्त्री होता है। और जो स्वामी अथवा राजा हितकारी उपदेशित वचनों को नहीं सुनता है वह कुत्सित राजा है। इसलिए राजा अथवा मन्त्री परस्पर अनुरागी हों। तब वहाँ भी सभी प्रकार की राज सम्पत्तियाँ स्थिर होती हैं। अतः मेरे द्वारा आपके भावी कल्याण के लिए जो कहता हूँ, वह सावधानी से सुनें।

तात्पर्य अर्थ- राज्य की समृद्धि के लिए राजा और मन्त्रियों में एकमत आवश्यक होता है यह इस श्लोक में प्रतिपादित किया गया है। जो स्वामी को सदैव हितकारी वचन ही कहता है वह योग्य अमात्य है। जो अमात्यादि के उपदेश को सुनकर स्वीकार करता है वह योग्य स्वामी है। इसलिए जो परस्पर अनुरागी है उनके भवन में सम्पत्तियाँ स्थिर होती है। वह कहीं और जाने के लिए एक कदम भी नहीं उठाती।

पाठ-19

वनेचर का गुप्तचर के अनुरूप वचन

ध्यान दें:

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- सर्वसम्पद:- सर्वा: (कर्मधारय समास) सम्पद:।
- शास्ति- शास् धातु, लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।
- संश्रृणुते: सम् + श्रु धातु, लट् लकार, प्रथम पुरुष एकवचन।

सन्धि युक्त शब्द

- हितान्न - हितात् + न, हल् सन्धि।
- नृपेष्वमात्येषु- नृपेषु + अमात्येषु, यण् सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन-

- येन अधिप: साधु न शिष्यते, तेन किंसख्या भूयते, येन हितात् न संश्रृणुते, तेन किंप्रभुणा भूयते। सदा अनुकूलेषु नृपेषु अमात्येषु च सर्वसम्पद्धि: रति: क्रियते।

अलंकार आलोचना

- यहाँ स्वामी और सेवक का एकमत कारण है और सभी सम्पत्तियों की सिद्धि कार्य है। उस कारण की कार्य समर्थता के लिए अर्थान्तरन्यास अलंकार है।

कोश:-

- सखा- वयस्य: स्निग्ध: सवया अथ मित्रं सखा सुहृत्।

पाठगत प्रश्न-5

21. कौन कुत्सित मित्र है?
22. कौन कुत्सित स्वामी है?
23. अनुरागी राजाओं और अमात्यों में क्या होता है?
24. कब सभी सम्पत्तियाँ अनुराग करती है?
25. शास्ति का अर्थ क्या है?

मूल पाठ

निसर्गदुर्बोधमबोधविक्लवा: क्व भूपतीनां चरितं क्व जन्तव:।
तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया निगूढ़तत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्॥16॥

अन्वय- निसर्गदुर्बोधं भूपतीनां चरितं क्व। अबोधविक्लवा: जन्तव: क्व। मया विद्विषां निगूढतत्त्वं नयवर्त्म यत् अवेदि, तत् अयम् तव अनुभाव:।

अन्वयार्थ- स्वभाव से ही दुर्बोध राजाओं का चरित्र कहाँ। अविवेकी मुझ जैसा साधारण प्राणी कहाँ। बुद्धिमता कार्य को बुद्धिमान ही करते हैं। मेरे द्वारा शत्रुओं का अत्यन्त गुप्त तत्व वाला नीति मार्ग अर्थात् राजनीति मार्ग जो मेरे द्वारा जाना गया है यह आप युधिष्ठिर का ही प्रताप अर्थात् महिमा है।

सरलार्थ- राजा का चरित्र अस्वभाविक होता है। उसे तो महा बुद्धिमानी व्यक्ति भी अच्छी प्रकार से नहीं जान सकते है। इसलिए मेरे मन्दबुद्धि द्वारा कैसे जाना जा सकता है। फिर भी मैनें जो थोड़ा बहुत भी जाना है, वह तो केवल आपकी ही महिमा है।

तात्पर्यार्थ- प्रस्तुत इस श्लोक में राजा के चरित्र की कठिनता अर्थात् दुर्बोधता अथवा गुप्तचर की विनयशीलता और निराभिमानिता निरुपित की गई है। राजा के स्वभाव से बुद्धिमान भी अनभिज्ञ होते हैं। मेरे जैसे प्राणी का तो कहना ही क्या। फिर भी शत्रु के अत्यन्त गुप्त रहस्यमयी नीतिमार्ग को मैंने जाना। वह आपके ही सामर्थ्य से, वह मेरा तो सामर्थ्य नहीं है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- अवेदि- विद् धातु, लुङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।
- निगूढ़तत्त्वम् - निश्चयेन गूढं। गति समास, निगूढं तत्त्वं यस्य तद्-बहुव्रीहि समास।
- नयवर्त्म - नयस्य वर्त्म। षष्ठी तत्पुरुष समास।

सन्धि कार्य

- यन्मया - यत् + मया, हल् सन्धि।
- तवानुभावोऽयम् - तव + अनुभाव: सवर्ण दीर्घ + अयम् विसर्ग सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन-

- निसर्गदुर्बोधेन भूपतीनां चरितेन क्व भूयते। अबोधविक्लवै: जन्तुभि: क्व भूयते। निगूढ़तत्त्वं विद्विषां नयवर्त्म अहं यत् अवेदिषम् अनेन तव अनुभावेन भूयते।

अलंकार आलोचना-

- यहाँ विषम अलंकार है। दोनों कथनों में अत्यधिक विषमता होने के कारण।

कोश:-

- जन्तु:- प्राणी तु चेतनो जन्मी जन्तु जन्य शरीरिण:।

पाठगत प्रश्न-6

26. राजाओं का चरित कैसा होता है?
27. नयवर्त्म शब्द का क्या अर्थ है?
28. प्राणी किसके जैसे होते हैं?
29. अनुभाव का क्या अर्थ है?
30. वनेचर ने शत्रुओं का क्या जाना?

पाठ-19

वनेचर का गुप्तचर के अनुरूप वचन

ध्यान दें:

पाठ-19

वनेचर का गुप्तचर के अनुरूप वचन

ध्यान दें:

पाठ सार

युधिष्ठिर दुर्योधन से द्यूत क्रीड़ा में छल से पराजित होकर सब कुछ हार कर वन में रहता था। तब युधिष्ठिर के मन में दुर्योधन का कैसा राज्यशासन है इस विषय में विचार उत्पन्न हुआ। क्योंकि राज्य में प्रजा यदि प्रसन्न हो तब ही राजा की राज सम्पत्ति सुप्रतिष्ठित होती है। उसने वहाँ दुर्योधन की राज्य शासन पद्धति को जानने के लिए वनेचर को भेजा। और वह ब्रह्मचारी वेश को धारण करके वहाँ जाकर सब कुछ ज्ञात करके वहाँ से आकर युधिष्ठिर से सब कहने के लिए युधिष्ठिर के पास द्वैतवन को लौट आया। वहाँ युधिष्ठिर को प्रणाम करके वह दुर्योधन से वशीकृत राज्य की शासन विधि को यथा स्वरूप कहने के लिए उद्यत हुआ। परन्तु राजा से कैसे अप्रिय वचन कहे ऐसा सोचकर उसका मन व्यथित नहीं हुआ। क्योंकि अप्रिय सत्य वचन ही हितैषी गुप्तचरों का कर्तव्य होना चाहिए। वह अप्रिय हो अथवा प्रिय। इसलिए राजा के हितकारी सेवक मन में भी कभी असत्य वचन नहीं कहते हैं। उनका सत्य वचन ही परम धर्म है। एवं वनेचर शत्रुओं के विनाश साधन के लिए उपाय को सोचकर राजा युधिष्ठिर की आज्ञा को प्राप्त कर उस एकान्त प्रदेश में कहने योग्य वचनों को सुमधुर भाषा में कहना आरम्भ किया कि हे राजन्! किसी भी कार्य में नियुक्त सेवकों से अपने राजा को नहीं ठगा जाना चाहिए। क्योंकि राजा के चार नेत्र होते हैं। अर्थात् कोई नेत्रवाला व्यक्ति जो नेत्रों से देखता है उस ही प्रमाण को कहता है। इसी प्रकार गुप्तचर जो कहते हैं वह ही उनका प्रमाण होता है। सदैव प्रिय वचन दुर्लभ ही है। इसलिए प्रिय अथवा अप्रिय वचनों को धैर्य को धारण कर सुनना चाहिए। और उचित अथवा अनुचित जो भी बोलें उसके लिए क्षमा करना चाहिए। क्योंकि एक ही वाक्य हितकर और मधुर दोनों नहीं होता। और जो मित्र अथवा मन्त्री राजा से हितकारी वचनों को नहीं कहता वह कुत्सित मित्र अथवा कुत्सित मन्त्री होता है। इसी प्रकार जो राजा हितकारी वाक्यों को नहीं सुनता वह भी कुत्सित राजा होता है। इसलिए राजाओं एवं मन्त्रियों को परस्पर अनुरागी होना चाहिए। तब ही वहाँ सारी राज सम्पत्तियाँ स्थिर होती हैं। इसलिए आप को मेरे द्वारा जो भावी मंगल के लिए कहा गया है उसे ध्यान से सुनना चाहिए। राजाओं का चरित्र सदैव अस्वाभाविक होता है। उसे तो महाबुद्धिमान व्यक्ति भी सम्यक् रूप से नहीं जान सकते हैं। इसलिए मेरे मन्दबुद्धि द्वारा कैसे जान सकते हैं। फिर भी मैं जो कुछ भी जान पाया हूँ वह तो केवल आपकी ही महिमा है।

पाठान्त प्रश्न

1. वनेचर किस कार्य में नियुक्त हुआ?
2. वनेचर ने किस उपाय से वह कार्य सम्पादित किया?
3. राजा किससे नहीं ठगा जाना चाहिए?
4. कौन कुत्सित मित्र और कुत्सित राजा है?
5. वनेचर का वचन किसके जैसा था? और किसके सदृश वचन दुर्लभ हैं?
6. 'क्व भूपतीनां चरितं क्व जन्तवः' यहाँ प्रयुक्त दोनों क्व शब्द क्या सूचित करते हैं?

7. समानार्थक धातुरूप से मिलाओ

क- स्तम्भ	ख- स्तम्भ
1. अवेदि	क. कुर्वन्ति
2. इच्छति	ख. व्यथितम्
3. समाययौ	ग. शक्नोति
4. अर्हति	घ. अज्ञायि
5. कुर्वते	ङ वांछति।
6. माददे	छ. स्वीकृतवान्
7. विव्यथे	ज. समागतवान्

उत्तराणि- 1-घ, 2.-ङ, 3-ज, 4-ग, 5-क, 6-छ, 7-ख।

आपने क्या सीखा

1. अमात्यों को कैसा होना चाहिए। इस पाठ से जानते हैं।
2. राजा को किसके जैसा होना चाहिए यह भी इस पाठ से जानते हैं।
3. हितैषी झूठ और प्रिय बोलने की इच्छा नहीं करते है।
4. हितकारी और मनोहारी वचन दुर्लभ होते हैं।
5. गुप्तचर कैसे विनयी और अनुरागी होते हैं ऐसा समझते हैं।
6. नए शब्दों तथा विविध अलंकारों का भी ज्ञान प्राप्त करते हैं।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

1. द्वैतवन में
2. युधिष्ठिर के
3. प्रजाओं की वृत्ति को जानने के लिए।
4. किरात
5. वनेचर का

उत्तर-2

6. हितैषी व्यक्ति
7. वनेचर का
8. असत्य और प्रिय

ध्यान दें:

ध्यान दें:

9. युधिष्ठिर
10. कल्याणकामिन

उत्तर-3

11. वनेचर
12. एकान्त में
13. आज्ञा को
14. शत्रुओं के विनाश के लिए
15. शब्द सामर्थ्य और अर्थ गाम्भीर्य से युक्त संदेह रहित।

उत्तर-4

16. कार्यों में नियुक्त
17. हितकारी और मनोहारी
18. गुप्तचर
19. चार नेत्रों वाले
20. प्रिय अथवा अप्रिय

उत्तर-5

21. जो राजा को हितकारी उपदेश नहीं देता।
22. जो हितैषी से हितकारी वचनों को नहीं सुनता।
23. सभी सम्पदाएँ अनुराग करती है।
24. राजाओं और मन्त्रियों के अनुरागी होने पर
25. उपदेश करता है

उत्तर-6

26. कठिनता से जानने योग्य
27. नीतिमार्ग
28. अज्ञानी
29. महिमा
30. अत्यन्त गुप्त तत्त्व वाला